Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2020, VOL- 8/41

बी.पी.एल. परिवारों हेतु उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाएं एवं गतिशीलता : एक अध्ययन

सुशील कुमार मुन्ना, Ph. D.

पूर्व शोध–छात्र, व्यावहारिक अर्थशास्त्र विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Abstract

प्रस्तुत शोध–पत्र इंपीरिकल पद्धति पर आधारित है। वस्तुतः इस शोध–पत्र में उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित योजनाओं का बी.पी.एल. परिवारों पर प्रभाव और उससे उत्पन्न गतिशीलता को देखने का प्रयास किया गया है। 1980 के बाद हम देखें तो उत्तर प्रदेश की अद्यतन विभिन्न सरकारों द्वारा बी.पी. एल. परिवारों को मुख्यधारा में लाने के लिए ढेर सारे कार्यक्रम चलाये गये। इन कार्यक्रमों के द्वारा बी. पी.एल. परिवारों में विविध स्तरों पर गतिशीलता भी बढ़ी है। परिणामस्वरूप बी.पी.एल. परिवार भी मुख्यधारा में अपना स्थान सुनिश्चत करने में सक्षम दिख रहे हैं। साथ ही आर्थिक सहभागिता सुनिश्चित होने के कारण अपनी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर रहे हैं।

प्रमुख शब्दावली : *बी.पी.एल. परिवार, योजनाएँ, घटक, अर्थव्यवस्था, गतिशीलता, कमजोर वर्ग, पूंजीवाद, अनुसूचित जाति एवं जनजाति, दृष्टिकोण, औद्योगिकीकरण, संस्कृतिकरण, पाश्चात्य सभ्यता, संवैधानिक व्यवस्था।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिचय एवं सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

किसी भी समाज में आर्थिक गतिशीलता उसके विकास, समृद्धि और परिवर्तन को इंगित करता है। मानव सभ्यता की विकासयात्रा में हम देखें तो जनसंख्या का एक बड़ा भाग मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति से वंचित रहा है। यह वंचना इतिहास के प्रत्येक कालखंडों में देखी जा सकती है। आर्थिक भागीदारी, गैर–बराबरी के स्तर पर ही रही है। इस पक्ष को हम कार्ल मार्क्स की रचनाओं में हम बेहतर ढंग से देख सकते हैं। वैसे मानव सभ्यता जैसे–जैसे विकास के पायदान पर आगे बढ़ती गयी, वैसे–वैसे विविध स्तरों पर कुछ हद तक उसकी भागीदारी सुनिश्चित हुई है। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है। लेकिन आर्थिक स्तर पर सम्पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पायी, जिसके कारण हाशिए का मानव में गतिशीलता के बजाय जड़ता की स्थिति बनी रही है।

स्वतंत्र भारत में हम देखें तो स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि इस धरा के समस्त

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संसाधनों की लगाम मुट्ठी भर लोगों के ही हाथों में है, जिसके कारण जनसंख्या का एक बड़ा तबका मौलिक आवश्यकताओं से वंचित रहा है। हाशिए के समाज को मुख्यधारा में लाने के लिए हम ढेर सारे समाज वैज्ञानियों को देखते हैं, जिसमें ज़्यान्द्रेज और अमर्त्यसेन के अध्ययन उल्लेखनीय हैं। समाज वैज्ञानियों के अध्ययनों के आधार पर स्वतंत्र भारत में हाशिए के समाज को मुख्यधारा में लाने के लिए ढेर सारी योजनाएं चलाई गई। उत्तर प्रदेश द्वारा भी इन योजनाओं का बड़े स्तर पर क्रियान्वयन किया गया। इन योजनाओं के क्रियान्वयन से बी.पी.एल. परिवारों की जड़ता में गतिशीलता दृष्टिगोचर होती है। अद्यतन उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ऐसी ढेर सारी योजनाएं संचालित की जा रही है जिसका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में बी.पी.एल. परिवारों में बड़े स्तर पर पड़ा है। समाज के मुख्यधारा में लौटते भी वे दिख रहे हैं। इस संदर्भ में मेडिसन का कहना है कि विकास का तात्पर्य उपलब्ध क्षेत्रों के उपयोग से व्यक्तियों का समृद्धिकरण करना है। विकास की गतिशीलता को आर्थिक विकास के परिप्रेक्ष्य में संचालित योजनाओं के माध्यम से कौशल निर्माण पर बल दिया जाता है। नवीन व्यवसाय एवं कार्य हेतु सरकार विविध माध्यमों से जनता को प्रशिक्षण प्रदान करती है। इसका कारण है कि आर्थिक विकास कार्य की कुशलता पर निर्भर करता है। प्रो. सुल्ज का कथन है कि मानवीय पूंजी का विकास और आर्थिक प्रणाली का सबसे महत्वूपूर्ण लक्षण है। ऐसा बिना दरिद्रता तथा कठिन शारीरिक श्रम से हमें मुक्ति नहीं मिल सकती।

अस्तु इन्हीं सब पक्षों का तथ्यपरक विश्लेषण चयनित उत्तरदाताओं के साक्षात्कार से प्राप्त तथ्यों के माध्यम से निम्नलिखित बिन्दुओं पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है :

बीपीएल परिवारों में गतिशीलता

आर्थिक विकास के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो सामाजिक व्यवस्था यह इंगित करती है कि श्रम एवं पूंजीवाद एक–दूसरे से सम्बन्धित विकास के रूप में देखें जाते हैं। आज भारत में विकास की जो प्रक्रिया अपनायी जा रही है उसका मुख्य उद्देश्य हाशिए के समाज एवं वंचितों को मुख्य धारा में लाना तथा उनके बीच विविध स्तरों पर गतिशीलता प्रदान करना है। इस संदर्भ में चयनित उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि जो संचालित योजनाएं हैं, उसका लाभ उन्हें किस प्रकार से प्राप्त हो रहा है तथा लाभ

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्राप्ति के पश्चात् उनकी सामाजिक दशाएं किस रूप में परिवर्तित हुई। यदि परिवर्तन हुआ है तो उसमें गतिशीलता की भूमिका किस रूप में अधिक पायी गयी। इस संदर्भ में सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि बी.पी.एल. परिवारों हेतु उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित विविध योजनाओं के प्रभावस्वरूप उनके जीवन का स्तर समृद्ध हुआ एवं उनके बीच गतिशीलता में भी वृद्धि हुई है।

शैक्षणिक गतिशीलता

विकास के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक सूचकांक के घटने एवं बढ़ने को निर्धारित करते है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम से है जिससे मानव का सम्पूर्ण विकास होता है। आज जिस पायदान पर दुनियां खड़ी है, वहां शिक्षा के अभाव में हम किसी भी प्रकार विकास एवं परिवर्तन की बात नहीं कर सकते हैं। आज भारत में शिक्षा को बढ़ावा देने एवं हाशिए के समाज को शिक्षा के पायदान पर लाने के लिए ढेर सारी योजनाएं चलाई जा रही हैं। कहा जाता है कि– शिक्षा जहाँ समग्र विकास को दर्शाता है, वहीं शैक्षणिक वृद्धि के पश्चात् उपभोग वाली दृष्टिकोण में तीव्रता दिखलाई पड़ती है। श्रम की गतिशीलता अथवा व्यवसाय चुनने को चुनने में भी शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। आर्थिक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक समय में माना जाता है कि रोजगार आवश्यक प्रयत्न सिद्धान्त पर पूंजी उत्पादन के अनुपात प्रयत्न सिद्धान्त पर पूंजी उत्पादन के अनुपात में बनता जाता है। शिक्षा के माध्यम से वित्तीय क्रियाशीलता का भी निर्माण होता है। आज हाशिए के समाज के लिए निःशुल्क शिक्षा, आवासीय शिक्षा एवं मिड–डे मील योजना संचालित की जा रही हैं। शैक्षणिक गतिशीलता के संदर्भ में चयनित उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि शैक्षणिक योग्यता के माध्यम से आर्थिक विकास की गतिशीलता का विशेष रूप से प्रभावी माना जाता है। सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के प्रभावस्वरूप शैक्षणिक गतिशीलता में वृद्धि को स्वीकार किया है। इस तथ्य यह अवधारणा निर्मित होती है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाएं हाशिए के समाज को केन्द्र में लाने में सक्षम दृष्टिगत हो रही है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सामाजिक गतिशीलता एवं जातीय सम्बन्धों में बदलाव की स्थिति

जाति व्यवस्था के पारम्परिक सिद्धान्त को यदि हम देखें तो पाते है कि इसमें व्यवसाय जन्म से ही निर्धारित रहता है। जो जातिगत विशिष्टता से सम्बद्ध भी रहता है। अनेक दिशाओं में पाया गया कि जाति व्यवस्था के आधुनिक स्वरूप में व्यवसायों एवं आर्थिक नीतियों ने सामुदायिक गतिशीलता प्रदान की है। यह स्थिति आर्थिक विकास के सम्बन्ध में परिवर्तन की दृष्टि के साथ ही साथ सामाजिक गतिशीलता सक्रिय बनाती है।

भारत में जातिय व्यवस्था का इतिहास काफी पुरातन है। जातीय व्यवस्था के आधार पर कार्यों का निर्धारण भी दृष्टिगोचर होता है। जातीय आधारित कार्यो के निर्धारण के कारण जनसंख्या का एक बड़ा भाग अस्पृश्यता एवं छुआछूत की वैचारिकी से पोष्ति रहा है लेकिन इधर के कुछ दशकों में हम देखें तो, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के माध्यम से लोग आर्थिक स्तर पर विविध क्षेत्रों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं। जिसके कारण जातीय सम्बन्धों की दूरियां भी मिट रही हैं। आज विविध जाति के लोग एक–दूसरे के कार्यक्रमों में बिना भेद के सम्मिलित हो रहे हैं। यह गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। इस संदर्भ में बी.पी.एल. परिवारों का मानना है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के आर्थिक प्रभाव ने अस्पृश्यता एवं छुआछुत की वैचारिकी को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। छुआछुत एवं अस्पृश्यता की वैचारिकी कमजोर पड़ने से जातीय सम्बन्धों में भी बड़े स्तर पर बदलाव देखने को मिल रहे हैं।

आर्थिक गतिशीलता से प्राप्ति वृद्धि का स्वरूप

समाज में विकास हेतु अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं। जिसके कारण बी.पी.एल. परिवारों की आर्थिक भागीदारी बड़े स्तर पर सुनिश्चित हुई है। आज लोग सरकारी एवं गैर–सरकारी क्षेत्रों में अपना प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। यह सम्भव योजनाओं के प्रभावस्वरूप ही हो पाया है। गतिशीलता के साथ परिवर्तन के स्तर पर माना जाता है कि समूह का विकास आपसी सहयोग से ही सम्भव हो सकता है। आर्थिक विकास व सामाजिक गतिशीलता क्षेत्रीय विकास के साथ–साथ राष्ट्रीय विकास में परस्पर सहयोग करती है। इसका कारण है कि आर्थिक व सामाजिक परस्पर एक–दूसरे से अन्तर्सहयोगी होते हैं। इस संदर्भ में चयनित उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

क्या आर्थिक विकास की प्रक्रिया द्वारा सामाजिक विकास गतिशीलता का स्वरूप दर्शाता है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसका प्रभाव समग्र क्षेत्र पर सामान्य रूप से दिखलाई पड़ता है। इस तथ्य को अधिकांश उत्तरदाताओं ने पूरी शिद्दत के साथ स्वीकार किया है।

आर्थिक विकास के संबंध में एक–दूसरे जातियों का एक–दूसरे जातियों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन

जाति के सन्दर्भ में प्रायः कहा जाता है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा पिछड़े वर्गों की एक बड़ी जनसंख्या बी.पी.एल. परिवारों के रूप में रही है। इन्हें कमजोर वर्गों के रूप में जाना जाता है। जिसके कारण इनमें आर्थिक स्तर निम्न रहा है। आर्थिक स्तर निम्न होने के कारण जातीय दूरियां लम्बे समय तक बनी रही हैं। स्वतंत्र भारत में इन कमजोर वर्गों के लिए ढेर सारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् निर्मित विभिन्न पंचवर्षीय योजना इस प्रकार से निर्मित की गयी कि और संरचना कमजोर वर्ग पूंजी और विकास कार्यरत समान्तर रूप से लाभ को प्राप्त करें। अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में यह माना गया कि प्रभावी संसाधनों को न केवल सीमित किया जाय बल्कि उपयोग और उपभोग के मध्य संतुलन की स्थिति बनाने के लिए समावेश और प्रतिस्पर्धा की ढांचागत सुधार लागू किया जाय। जातिय अन्तर कम करने के लिए उत्तर प्रदेश तथा अन्य राज्यों जिनकी आबादी अधिक है पर कल्याण कार्यक्रम को प्रभावी स्थिति के निर्धारित किया जाय। आज हम देखें तो भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा कौशल विकास योजना, रोजगार, स्वास्थ्य एवं पोषण के साथ ही साथ चिकित्सा की निःशुल्क व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही हैं। इस संदर्भ में चयनित उत्तरदाताओं से साक्षात्कार से जो तथ्य प्राप्त हुए वे तथ्य उपरोक्त पक्षों की पुष्टि करते हैं। इनका मानना है कि हाशिए के समाज में आर्थिक स्तर सुनिश्चित होने के कारण विविध जातियों का एक–दूसरी जति के दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन आया है। यह पक्ष जातीय सम्बन्धों की गतिशीलता को दर्शाता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत शोध–पत्र के निष्कर्ष को दृष्टिगत किया जाय आज उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित योजनाओं का बी.पी.एल. परिवारों पर गहरा एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। शोध–पत्र में प्राप्त तथ्यों से यह भी ज्ञात होता है कि संचालित

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

योजनाओं के परिणामस्वरूप लाभान्वित परिवारों के जीवन स्तर के गतिशीलता में वृद्धि हुई है। इन योजनाओं के माध्यम से शैक्षणिक योजनाएं भी प्रभावित हुई हैं और शिक्षा के स्तर में वृद्धि हुई है। योजनाओं के लाभ के परिणामस्वरूप सर्वाधिक उत्तरदाता सामूहिक गतिशीलता को स्वीकार करते हैं। सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत जातीय सम्बन्धों में सकारात्मक परिवर्तन को अधिकांश उत्तरदाता स्वीकार करते हैं। गतिशीलता के कारक के रूप में उत्तरदाताओं ने चैरिटी, औद्योगिकीकरण, संस्कृतिकरण, शिक्षा, पाश्चात्य सभ्यता, संवैधानिक व्यवस्था आदि सभी को स्वीकार किया है। सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता के संदर्भ में स्वीकार किया कि गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे लोगों में अन्य सम्पन्न व्यक्तियों में सामाजिक–आर्थिक सहयोग को स्वीकार किया। उन्होंने सहयोग में सामान्य सहयोग के रूप को स्वीकार किया। उत्तरदाताओं का मानना है कि यह स्थिति जातिय बन्धन के शिथिलता को दर्शाते हैं। इसी क्रम में उनका कथन है कि भेदभाव को अस्वीकार करके उच्च जातियों द्वारा उन्हें अपने घरों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जाता है। यह आमंत्रण सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता के वृहद सामाजिक परिवर्तन को दर्शाता है। यह दृष्टिकोण नव परिवर्तनवादी दृष्टिकोण की ओर संकेत करता है।

सन्दर्भ

गिरधारी, जी.डी. (1971) : 'ग्रामीण विकास व प्रबन्ध के महत्वपूर्ण पहलू', चेन्जिग मिलेंज रूरल न्यूज एण्ड व्यूज।

मेडिसन, ए. (1970) : 'इकोनोमिक प्रोग्रेस एण्ड पॉलिसी इन डेवलपिंग कन्ट्रीज', एलेन एण्ड अनविन पब्लिकेशन्स, लंदन

सिन्हा, वी.सी. (2011) : आर्थिक समृद्धि और विकास, मयूर पेपर बॉक्स, नवीन सहाद्रा, नई दिल्ली

बजट 2017–2018 : योजना, सूचना भवन सी.जी.ओ. परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, मार्च 2017

Dreze, Jear and Khera Reetika : The BPL Census and a Possible Alternative, Economic and Political Weekly, Vol. 45, No. 9

Alkire, Sabina and Seth, Suman: Selecting a Targeting Method to Identify BPL Households in India, Social Indicators Research, Vol. 112, No. 2.

Srinivas, T.N. : Poverty Lines in India : Reflections after the Patna Conference,

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

Economic and Political Weekly, Vol. 42, No. 41.

Vaidyanathan, A. : Poverty and Development Policy, Economic and Political Weekly, Vol. 36, No. 21.

Jayaraman, K. : Poverty in India : Policies and Programmes : A Comment, Economic and Political Weekly, Vol. 6, No. 40.

Sharma, C. L. (1996) : Social Mobility Among Scheduled Castes:An Empirical Study in an Indian State, M D Publications, New Delhi

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language